IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, May 2025
Impact Factor: 7.67

फिल्म संगीत में विभिन्न तालों के बोलों का प्रभाव और प्रयोग

दुर्गेश चन्द्र विश्वकर्मा[1] तथा डॉ. मंजू श्रीवास्तव[2]

शोधार्थी (संगीत कला एवं प्रदर्शन विभाग)[1]

विभागाध्यक्ष (संगीत कला एवं प्रदर्शन विभाग)[2]

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),जमुनीपुर,कोटवा, प्रयागराज

संक्षिप्त सार

यह शोधपत्र हिन्दी फिल्म संगीत में प्रयुक्त विभिन्नतालों (लयात्मक संरचनाओं)की भूमिका, विविधता और उनके सांगीतिक प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का जो स्थान है, वही स्थान फिल्मी संगीत में भी तालों को प्राप्त है — वह गीत की आत्मा को गति, प्रवाह और अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

शोधपत्र की शुरुआत ताल के मूल तत्वों (मात्रा, ताली, खालि, सम आदि) की व्याख्या से होती है, तत्पश्चात हिन्दी फिल्म संगीत के आरंभिक युग (1930-1950) से लेकर आधुनिक युग (2000 के बाद) तक तालों के प्रयोग की यात्रा को दर्शाया गया है। इसमेंतीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल, एकतालजैसी पारंपरिक तालों के साथ-साथमिश्र ताल, लोकताल, तथाडिजिटल रिदम पैटर्नके प्रयोग का उल्लेख मिलता है।

इसके साथ-साथ यह शोध यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार क्षेत्रीय लोकतालों (जैसे कजरी, लवणी, तिरुपुगल आदि) को फिल्म संगीत में समाहित किया गया है। ए.आर. रहमान, नौशाद, और पं. रवि शंकर जैसे संगीतकारों के योगदान का भी संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है।

अंततः शोधपत्र यह निष्कर्ष देता है कि ताल केवल संगति या तालमेल का माध्यम नहीं है, बल्कि वहगीत की भावात्मक गहराई, नृत्य संरचना, तथासंगीतकार की कल्पनाशीलताको भी आकार देती है।

इस शोध में प्रयुक्त संदर्भ ग्रंथ, साक्षात्कार, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और विश्लेषित गीत ताल पर आधारित फिल्म संगीत की समृद्ध परंपरा और निरंतर नवाचार को उजागर करते हैं।

मुख्यशब्द :-संगीत,फिल्म,ताल और नृत्य संरचना आदि

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568